संस्कृत साहित्य सौरभ
रावण-वध

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

२७

भट्टि-कृत

रावण-वध

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल
द्वारा
कथासार
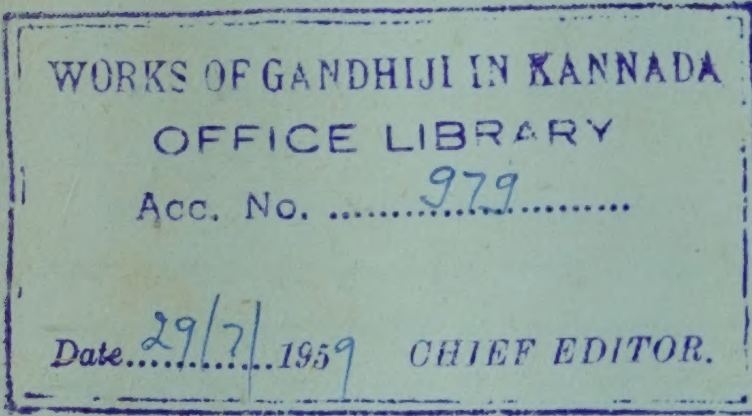
विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

१९५६

सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली
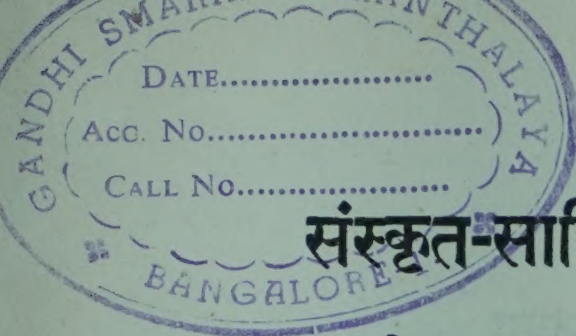
संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान् सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर बहुत समय पहले हमने विचार किया था कि संस्कृत के प्रमुख कवियों, नाटककारों आदि की विशिष्ट रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिन्दी में प्रस्तुत करें। फलत: अब तक कई पुस्तकें निकाल दी गई हैं।

इस पुस्तक-माला से हिन्दी के सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकें, इसलिए पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत साहित्य की महान् रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रन्थ पढ़ कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

भूमिका

महाकवि भट्टि का लिखा हुआ रामचरित काव्य संस्कृत-साहित्य में प्रसिद्ध है। 'रामचरित' में रामायण की कथा राम-जन्म से लेकर राम के अभिषेक तक कही गई है। भट्टि के विषय में बहुत कम ज्ञात है। काव्य के अन्त में उन्होंने यह स्वयं सूचना दी है कि यह ग्रंथ सौराष्ट्र की राजधानी वलभी में लिखा गया था। उस समय श्रीधरसेन वहां के राजा थे। वे कवि के आश्रयदाता थे। वलभी में श्रीधरसेन नाम के कई राजा हुए हैं, जिनमें से अन्तिम सातवीं शती के पूर्वार्द्ध में थे। उनकी मृत्यु ६४१ ई. में हुई। संभवत: वे ही भट्टि के समकालीन थे।

भट्टिकाव्य संस्कृत के और सब काव्यों से एक बात में विलक्षण है। भट्टि ने काव्य की पुष्पिका में अपने-आपको महावैयाकरण लिखा है। उनका यह उद्देश्य था कि पाणिनीय व्याकरण के सूत्रों के उदाहरणों को काव्य के श्लोकों में इस तरह भर दिया जाय कि काव्य के पढ़ने के साथ-साथ व्याकरण का भी अच्छा ज्ञान पाठक को हो सके। उन्होंने अपने काव्य के अन्त में लिखा है—"जिनकी दृष्टि व्याकरण के सूत्रों पर है उनके लिए यह काव्य दीपक का काम करेगा। पर व्याकरण के बिना यह ऐसा लगेगा जैसा अन्धे के हाथ में दर्पण।"

कवि ने जान-बूझकर अपने ऊपर बहुत बड़ा अंकुश लगा लिया था, फिर भी व्याकरण के प्रयोगों की अटूट झड़ी के साथ वे कथा के प्रवाह को लेकर बढ़ते चले जाते हैं। इसमें सब जगह काव्य के गुण खोजना व्यर्थ है, पर रावण की मृत्यु पर विभीषण का विलाप अपने ढंग का अनूठा है, जैसा और जगह नहीं मिलता।

—सम्पादक
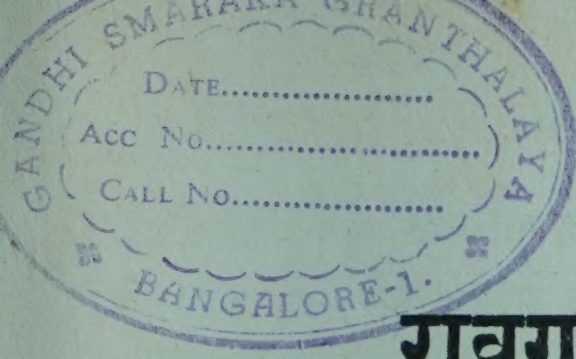
रावण-वध

: १ :

दशरथ नाम का एक राजा था। यह देवताओं का मित्र और विद्वान था। उसके गुणों से प्रसन्न होकर सनातन भगवान विष्णु ने उसे अपना पिता बनाया। वह राजा वेदपाठी, देवताओं के लिए यज्ञ करने वाला और बन्धुओं का सम्मान करने वाला था। वह मेघों की तरह धन बांटता था और इन्द्र के साथ एक आसन पर बैठता था। अमरावती के समान अयोध्या उसकी राजधानी थी। वह मानों ब्रह्मा की निर्माण-चातुरी की सीमा थी। उस राजा के तीन रानियां थीं। किन्तु पुत्र नहीं था। पुत्र की इच्छा से राजा ने पुत्रेष्टि यज्ञ के जाननें वाले ऋष्यश्रृंग को अपने यहां बुलवाया। यज्ञ पूरा होने पर रानियों ने यज्ञ का बचा हुआ पुरोड़ाश खाया। फलस्वरूप कौशल्या से राम, कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ। समय पर गुरु वशिष्ट ने राजकुमारों का उपनयन किया और वेद तथा शस्त्रों की शिक्षा दी।

एक बार राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने की इच्छा से विश्वामित्र मुनि राम को मांगने के लिए राजा के पास आए। राजा ने उनकी बड़ी आवभगत की।

मुनि नें कहा, "वन में राक्षस हमारी समाधि और यज्ञों में विघ्न डालते हैं। लक्ष्मण के साथ राम उन शत्रुओं का नाश करें।"

यह सुनकर राजा मूर्च्छित हो गए।

तब मनस्वी विश्वामित्र ने कहा, "धर्म की रक्षा के लिए मैंनें आपकी शरण ली है। क्षात्र धर्म और ब्राह्मण धर्म परस्पर सहायता की अपेक्षा रखते हैं। हे राजन्, शंका मत करो और पुत्रों को मेरे साथ भेज दो। इन छोटे-मोटे राक्षसों की तो बात ही क्या है, राम तो इनसे भी भयंकर शत्रुओं का नाश करेंगे। हे राजन्, मुझे निराश मत करो।"

राजा ने यह सोच कर कि ब्राह्मण के शाप से पुत्र का वियोग सह लेना अच्छा है, राम को जाने की आज्ञा दे दी।

नगर के बाहर निकल कर राम ने देखा---शरद् ऋतु की शोभा चारों ओर फैली हुई है---लाल कमल खिल रहे थे, प्रातःकाल की वायु से कांपती हुई कमलिनी रात में कुमुदिनी का रस-पान करनेवाले भौरों

को मानो रोक रही थी, भौरों की गुंजार और हंसों के कलरव से भूला हुआ बहेलिया हिरन पर निशाना लगाना भूल गया था, जल भरे हुए कुंज में अपनी ही प्रतिध्वनि से चकित सिंह उछल कर झपटना चाहता था। राम ने जल में खिले हुए कमलों को देखा, भौरों की गुंजार सुनी, पवन की सुगन्धि से चित्त को प्रसन्न किया, लताओं से गिरे हुए फूलों को चुनकर वे मुस्कराते हुए शिला पर बैठ गए और जल पर चमचमाती हुई प्रातःकालीन सूर्य-किरणों की शोभा देखते रहे। खेतों में हरे धान की सीधी लम्बी पंक्तियां देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। वे पंक्तियां मानों उनके प्रति स्नेह प्रकट कर रही थीं। उन्होंने उन सुखी ग्वालों को भी देखा जो बनावट से दूर रहते थे और जिनकी गोपियां सदा उनके पास रहती थीं। वे गोपियों के सीधे-सादे स्वभाव और लजीली दृष्टि को देखकर प्रसन्न हो उठे। आपस में किलोल करते हुए मृगों को देखकर राम को विशेष कुतूहल हुआ। यज्ञ करनेवाले तपस्वी हाथ में शान्ति-जल के घट और पुष्प लेकर राम की पूजा के लिए आए।

विश्वामित्र ने वन में उन्हें जया-विजया नाम की विद्याएं सिखाईं और राक्षसों को मारने के लिए

आवश्यक अस्त्र दिए। ऋषियों को देखते ही मार डालने वाली ताड़का नामक राक्षसी ने जब राम पर भी घात किया तो उन्होंने उसे तुरन्त ठिकाने लगा दिया और घूम-घूम कर तपोवन की शोभा देखने लगे। यज्ञ का धुआं वृक्षों की शाखाओं को धूमिल कर रहा था। वेदपाठ की ध्वनि पक्षियों के कलरव को दबा रही थी। तपोवन के प्रभाव से सिंह हिरनों को नहीं छेड़ते थे। लताएं फल देने के लिए झुकी हुई थीं। ऐसे तपोवन में वनवासियों ने दोनों राजकुमारों का विधि के अनुसार स्वागत किया और कहा, "आपने इस भूमि को राक्षसों से मुक्त करने का बहुत बड़ा भार अपने ऊपर उठाया है।"

राम बोले, "आप जैसे तपस्वियों की तप-रूपी वायु मेरे बाणों को अग्नि के समान तेज करके शत्रु-रूपी ईंधन को भस्म करती है।"

यह सुनकर मुनि लोग अपने यज्ञ-कर्म में लग गए और राक्षस लोग वर्षा के काले बादलों की तरह चारों ओर से आकाश में घिर आये। तब लक्ष्मण ने धनुष चढ़ा कर उनको मार डाला। मारीच को रण में डटे हुए देखकर राम ने ललकारा, "अरे दुष्ट, तू फलाहारी मुनियों के मांस से अपना पेट भरता है! तुझे दया नहीं आती।"

मारीच ने उत्तर दिया, "हे राघव, द्विजों को खाना हमारा धर्म है। ब्राह्मणों की तरह वेदाचार में हमारा अधिकार नहीं है।"

राम बोले, "अरे दुष्ट, यदि तेरा यह धर्म है तो तेरे जैसे ब्रह्मद्वेषियों को मारना हमारा भी धर्म है।"

यह कह कर राम ने अपने बाण से उस राक्षस को तिनके के समान दूर फेंक दिया। इससे वहां के सब मुनि प्रसन्न हुए और राम की बड़ाई करने लगे। इसके बाद मुनि विश्वामित्र राम को जनक की यज्ञ-भूमि में ले गए। जनक ने राम के बल की परीक्षा के लिए उन्हें शिव का धनुष दिया। राम ने बड़ी सरलता से उसे तोड़ डाला। इस पर जनक ने अपने दूतों को अयोध्या भेजा। सब हाल सुनकर राजा दशरथ मिथिला आये। वहां जनक ने उनकी बड़ी आवभगत की और अपनी पुत्री सीता का विवाह राम से कर दिया। सीता क्या थी, मानों चलती-फिरती सुनहरी लता थी या आकाश से नीचे उतरी हुई टिकाऊ विद्युल्लता थी या चन्द्रमा की अधिष्ठात्री देवी साक्षात् प्रकट हो गई थी। विवाह के अगले दिन दशरथ की सारी सेना अयोध्या के लिए चल पड़ी। लेकिन मार्ग में धनुर्धर परशुराम आते हुए दिखाई दिए। उन्होंने कड़क कर राम से कहा,

"इस धनुष पर बाण चढ़ाओ।" दशरथ उनके पराक्रम को जानते थे। बोले, "हे मुनि, क्रोध शान्त कीजिए। बालक राम आपके सामने क्या है!" लेकिन जब परशुराम ने दशरथ की बात पर ध्यान नहीं दिया तो राम ने धनुष खींच कर उस पर बाण चढ़ा दिया। फिर सेना अयोध्या की ओर चल पड़ी।

: २ :

राक्षसों के वध और परशुराम के पराभव से राम की कीर्ति शीघ्र फैल गई। तब राजा ने घोषणा की कि राम का राज्याभिषेक किया जायगा। उसके लिए तैयारियां होने लगीं। लेकिन कैकेयी ने इस कार्य में विघ्न डाला और राम के बन जाने का वर मांग लिया। राजा ने बदले में धन और देश देना चाहा, पर उसने कुछ भी स्वीकार न किया। उलटे, भरत के लिए राज-गद्दी मांग ली। राजा को उसकी बात स्वीकार करनी पड़ी। किसी ने राजा की निन्दा की, किसी ने भरत की और किसी ने कैकेयी को दोष दिया। शोक में भरी हुई जनता राम के साथ जाने को तैयार हो गई। राम ने लोगों को बहुत समझाया। बड़ी कठिनता से वे लौटे। गंगा-तट पर पहुंच कर उन्होंने सुमंत्र को भी लौटा दिया। राम के बिना सुमंत्र को देखकर दशरथ बहुत

दुखी हुए और उन्होंने प्राण त्याग दिये। रानियां विलाप करने लगीं। समाचार पाकर भरत तुरन्त अयोध्या लौटे और वहां की दशा देखकर शोक में डूब गए। जब उन्हें सब बातों का पता लगा तो उन्होंने कैकेयी को बहुत धिक्कारा।

राजा की अन्त्येष्टि करने के बाद भरत ने गद्दी पर बैठना स्वीकार नहीं किया, बल्कि राम को वापस लाने के लिए वह बन की ओर चले। मार्ग में ऋषि-मुनियों से मिलते हुए वह चित्रकूट पहुंच गए। नंगे पैर आगे बढ़ उन्होंने राम के चरण छुए और पिता की मृत्यु का समाचार सुनाया। राम व्याकुल हो उठे। बोले, "भाई, पिता ने मुझे सुखसाध्य बनवास देकर देश-रक्षा का कठिन काम तुम्हें सौंपा है। उनका सम्मान करने के लिए तुम पृथिवी का शासन करो।"

भरत ने कहा, "बड़े भाई के होते हुए मैं इस भार को कैसे स्वीकार कर सकता हूं? हे राम, कुल की कीर्ति का लोप करनेवाले इस काम में मुझे मत लगाओ। हाँ, यदि आप राजा हों तो आपकी आज्ञा से मैं राज का प्रबन्ध स्वीकार कर सकता हूं।" राम ने इस बात को स्वीकार किया और उनकी चरण-पादुका लेकर भरत वापस लौट गये। उनके लौट जाने पर राम दण्डकवन

की ओर चले गए। उस वन में उन्होंने विराध नामक राक्षस को मारा और वहां से वे शरभंग ऋषि के आश्रम में आए। उनके सामने ही शरभंग ऋषि नें अपना शरीर आग में भस्म कर दिया। तब वे सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में गए और पर्णशाला में रहने लगे। यहां पर शूर्पणखा से उनकी भेंट हुई। उसनें बारबार उन दोनों भाइयों को लुभाने की बड़ी चेष्टा की। अन्त में लक्ष्मण नें तलवार से उसकी नाक काट ली। इस पर वह क्रुद्ध हो उठी और खर-दूषण नामक अपने भाईयों को युद्ध के लिए ले आई। चौदह हजार वीरों को लेकर उन्होंने राम से भयंकर युद्ध किया। लेकिन राम-लक्ष्मण ने उन राक्षसों को अपने वाणों से इस प्रकार मार गिराया, जैसे शिकारी मृगों को और गरुड़ सर्पों को मारता है। उन्होंनें खर-दूषण को भी यमलोक पहुँचा दिया। तब शूर्पणखा लंका में रावण के पास गई और सब समाचार उसको सुनाए। उसने सीता की सुन्दरता का बखान करके रावण को भड़काया। रावण तुरन्त मारीच के पास पहुंचा और उससे सब हाल कहा। मारीच बोला, "हे रावण, तुम राम की शक्ति नहीं जानते। मैं जानता हूं। तुम लंका में मौज करते रहो। बलवान से लड़ाई मोल मत लो।"

लेकिन रावण नहीं माना और मारीच को मार डालने की धमकी देने लगा। मारीच डर गया और उसके साथ जाने को तैयार हो गया। बोला, "मैं सोने का हिरन बन राम-लक्ष्मण को लुभा कर दूर ले जाऊंगा, तब तुम अपना मन-चाहा करना।" उसनें ऐसा ही किया। वह राम को बहका कर दूर ले गया और जब राम ने उसे बाण से बींध डाला तो मरते समय उसने लक्ष्मण को पुकारा। वह पुकार सुनकर सीता डर गई और लक्ष्मण को राम की रक्षा के लिए भेंजा। लक्ष्मण ने बहुत समझाया, पर वह न मानी। उल्टे, उन्हें दोष देने लगी। तब वह चले गये। उनके जानें के बाद परिव्राजक का वेष बनाकर रावण वहां आया और छल से बलपूर्वक सीता को उठा ले गया। मार्ग में जटायु ने उसे रोका, लेकिन रावण ने उसके पंख काट डाले और सीता को लेकर वह लंका में चला आया।

: ३ :

रावण सीता को ले तो आया, लेकिन उसके तेज को देखकर वह बल प्रयोग न कर सका। उधर मारीच को मारकर लौटते हुए राम नें लक्ष्मण को देखा और सब समाचार जाना। वे शंकित हो उठे और दौड़कर

कुटिया पर लौटे, लेकिन सीता वहाँ नहीं थी। राम विलाप करने लगे। रोते-रोते वह मूर्च्छित हो गए। होश आने पर फिर पागलों की तरह वह मृग पक्षियों से सीता के विषय में पूछने लगे। अन्त में धनुष लेकर गरजते हुए उन्होंने कहा, "अभी मैं सूर्य के मार्ग को रोक लेता हूं, पहाड़ों को विदीर्ण कर देता हूं, समुद्र को सुखा देता हूं और यम को भी काल के मुख में पहुंचा देता हूं। क्या संसार ने मुझे बलहीन समझ रखा है ?" यह कहकर जैसे ही उन्होंने धनुष पर बाण रखा तैसे ही लक्ष्मण ने उन्हें रोका। कहा, "भाई, क्रोध न करो। आपसे कौन युद्ध कर सकता है ? पर इस समय जो उचित हो वही उपाय करना चाहिए।" तभी उन्होंने जटायू को देखा और उससे उन्होंने रावण का समाचार पाया। यह समाचार देकर जटायू ने प्राण छोड़ दिये। कुछ दूर आगे चलने पर उनकी भेंट लम्बी भुजाओं वाले कबन्ध राक्षस से हुई। राम ने उसकी भुजाएं काट डालीं तो भी उसने मित्रता दिखाते हुए कहा, "रावण सीता को लंका ले गया है। ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव रहता है। उसके भाई बाली ने उसकी स्त्री छीन ली है। हे राम, तुम उसके साथ मित्रता करो, उससे रावण का वध करना आसान होगा।" आगे बढ़ने पर राम

शबरी के आश्रम में पहुँचे। उसने उनकी भक्ति-भाव से पूजा की और कहा, "हनुमानजी द्वारा तुम्हारी सुग्रीव से मित्रता होगी और तुम शीघ्र सीताजी को पाओगे।" अन्त में राम ऋष्यमूक पर्वत पर आए। उन्हें देख कर सुग्रीव ने हनुमान को उनके पास भेजा। सब समाचार जान कर हनुमान उन्हें सुग्रीव के पास ले गए और अग्नि को साक्षी करके दोनों की मित्रता करा दी। इसके बाद राम की प्रेरणा से सुग्रीव बाली से युद्ध करने गया। इस युद्ध में छल से राम ने बाली को मार डाला। बाली ने राम को उपालम्भ देते हुए कहा, "हे राघव, आपने मुझे व्याध की तरह क्यों मारा?"

राम बोले, "हे बाली, तुमने छोटे भाई की स्त्री को छीन लिया है, इसलिए मैंने तुमको मारा।"

बाली कुछ उत्तर न दे सका और अपने पुत्र अंगद को राम के हाथ सौंप कर मर गया। उसके बाद वर्षा-ऋतु आ गई। सीता के वियोग में राम व्याकुल हो उठे। धीरे-धीरे शरद आई और दल-के-दल क्रौंच पक्षी आकाश में दिखाई देने लगे। राम लक्ष्मण से बोले, "आज भी सीता को ढूंढ़ने के लिए सुग्रीव कुछ नहीं कर रहा है। वर्षा बीत गई है, पर अब भी वह प्रमादी

घर में पड़ा हुआ है। अवश्य ही वह बाली के मार्ग पर जाना चाहता है। तुम जाकर उस दुष्ट को समझाओ।" लक्ष्मण तुरन्त किष्किन्धा आए। सुग्रीव ने नम्रता से उनसे कहा, "आपकी कृपा से मैं राम के दिये हुए भोगों को भोगता हुआ आराम करने लगा था, पर अब मैं तुरन्त ही बानरों को भेजता हूं।" और वह सेना को लेकर राम के पास पहुँचा। राम को सन्तोष हुआ। सुग्रीव ने बानरों को चारों दिशाओं में जाने का आदेश दिया। हनुमान को उन्होंने विशेष रूप से दक्षिण दिशा में भेजा। राम ने उन्हें अपनी मुद्रिका दी। उसे लेकर हनुमान वहां से चल पड़े। मार्ग में एक गुफा में उनकी स्वयंप्रभा नामक स्त्री से भेंट हुई। उसने उन्हें आंख मींच लेने को कहा। तब उसके प्रभाव से वे उस खड्ड से निकल कर एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां जटायू का भाई सम्पाति रहता था। उसने उन्हें लंका का मार्ग बताया। वहां से वे लोग समुद्र तट पर आए। उस अगाध समुद्र को देखकर सबने हनुमान से ही पार जाने की प्रार्थना की।

हनुमान आकाश-मार्ग से समुद्र पार चले। मार्ग में उन्होंने एक राक्षसी को मारा और वह शीघ्र ही लंका पहुंच गए। वहां उन्होंने राक्षस और पिशाचों

से भरी हुई लंका को देखा। वह छिपकर सीता को ढूंढने लगे। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते रावण के महल में पहुंचे, लेकिन सीता वहां नहीं थी। फिर वे अशोक वाटिका में आए। वहां घने वृक्षों के बीच उन्होंने सीता को देखा। वह अत्यन्त मलिन वेष में थी और किसी प्रकार अपने आपको राक्षसियों से बचा रही थी। उसी समय रावण वहां आया और अनेक प्रकार से अनुनय-विनय करने लगा, लेकिन उत्तर में सीता ने यही कहा, "हे दुष्ट, राम शीघ्र ही यहां आयंगे, तू उनके बाण से बच कर कहां जायगा? वे तेरा नाम भी शेष नहीं रखेंगे।" इस पर रावण क्रुद्ध हो उठा। बोला, "यदि एक मास के भीतर तुम मेरे पास नहीं आओगी तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।" और भयंकर राक्षसियों को वहां छोड़ कर वह चला गया। वे राक्षसी सीता को डराने लगीं तो त्रिजटा ने उन्हें डांट कर वहां से हटा दिया। इसी समय हनुमान उनके सामने प्रकट हुए। अपना परिचय देते हुए उन्होंने सब समाचार सुनाए। उन्होंने राम की मुद्रिका भी सीताजी को दी। सीता ने उनके लंका प्रवेश पर आश्चर्य प्रकट करते हुए राम के विषय में बहुत-कुछ पूछा और अपनी चूड़ामणि देकर उनको विदा किया। तब हनुमान दूत के रूप में

कुछ पराक्रम दिखाने की इच्छा से अशोक वन को भंग करने लगे।

राक्षसों ने यह समाचार रावण को सुनाया। उसने अस्सी हजार राक्षसों को भेजा। हनुमान ने उन सबको मार डाला। यहां तक कि रावण के बेटे अक्षयकुमार को भी मार डाला। तब रावण ने मेघनाद को भेजा, मेघनाद और हनुमान में भयंकर युद्ध हुआ, लेकिन अन्त में मेघनाद ने ब्राह्मपाश चला कर हनुमान को बांध लिया और रावण के पास ले आया। रावण उन्हें मार डालना चाहता था, लेकिन विभीषण के यह कहने पर कि दूत अबध्य होता है, वह कुछ न कर सका। उसको क्रोध करते हुए देखकर हनुमान ने कहा, "हे रावण, तुम्हारे जैसे त्रिलोकपति को इस प्रकार एक दूत पर कुपित होना उचित नहीं। तुम राम और सुग्रीव के साथ सन्धि कर लो और सीता को लौटा दो।"

रावण और क्रुद्ध हुआ, बोला, "राक्षसों को मारना और उद्यान का नाश करना क्या यह दूत का काम है? स्त्री ताड़का को मारने वाला राम यदि तपस्वी है तो पापी कौन है? जिसने सुग्रीव के साथ युद्ध में लिपटे हुए बाली को मारा वह राम क्या बड़ाई के योग्य है?"

इस प्रकार बात बढ़ती चली गई और अन्त में रावण ने आज्ञा दी, "इस बन्दर को जला डालो।" जैसे ही हनुमानजी की पूंछ में आग लगाई गई वे आकाश में उड़ गए और उन्होंनें रावण की नगरी में आग लगाना शुरू कर दिया। देखते-देखते चारों ओर कोहराम मच गया। शीघ्र ही आग फैलने लगी और उसने चारों ओर से तोरण-सहित नगर को घेर लिया। नगर को जला कर हनुमान फिर सीता के पास गये और उनसे आज्ञा मांग कर समुद्र के इस पार आए।

उन्हें देखकर सब बानर बड़े प्रसन्न हुए और राम के समीप पहुंचे। हनुमान ने प्रणाम करके सीता की चूड़ामणि सामने रखी। राम पुलकित हो उठे। हनुमान ने कहा, "हे प्रभो, आपके प्रताप को न जानकर मूर्ख रावण सीता-रूपी अग्नि कण को लिये हुए लंका-रूपी वन में बैठा है। अवश्य ही उसका नाश होगा।" इस प्रकार सब समाचार जानकर राम, लक्ष्मण और सुग्रीव सेना सहित महेन्द्र पर्वत पर आए और दक्षिण में समुद्र के दर्शन किए।

: ४ :

उधर सवेरा होने पर लंका में विभीषण सोकर उठा तो उसकी माता नैकषी ने उससे कहा, "हे तात,

तुम अपने सहोदर को शीघ्र समझाओ कि वह सीता को वापस कर दे।"

तब विभीषण रावण के पास पहुंचा और प्रणाम करके कहने लगा, "हे तात, तुमने इन्द्रादि देवों को वश में किया है। शिव के साथ कैलास को भी उठा लिया है। तुम्हारा प्रताप सब जानते हैं, लेकिन राम ने अकेले ही बाली को मार कर सुग्रीव को राजा बना दिया है। उन्होंने खर-दूषण को मार दिया है। उनके दूत ने लंका को जलाकर हमें बहुत दुःख पहुंचाया है। ऐसे राम के साथ यद्ध करना ठीक नहीं। तुम सीता को लौटा कर सन्धि कर लो।" रावण के नाना बूढ़े माल्यवान ने भी इस बात का समर्थन किया, लेकिन रावण अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा और कहने लगा, "तू हमारे कुल में कलंक मत लगा। यदि जल में शिला तैर सकेगी, यदि सूर्य अन्धकार की वृष्टि करेगा तभी मेरी हार सम्भव है।" यह कहकर उसने विभीषण को उठा दिया और सिर पर एक लात मारी। उस पर भी विभीषण शान्त रहा और चार मन्त्रियों के साथ वहां से चला गया। वह राम के पास पहुंचा। सब समाचार जानने के पश्चात् राम ने वहीं उसे लंका का राजा बनाकर अभिषेक कर दिया।

इसके बाद समुद्र को वश में करने के लिए राम ने एक महाबाण छोड़ा। उससे समुद्र की मर्यादा भंग हो उठी। भय से व्याकुल होकर समुद्र ने राम से कहा, "हे भगवन्, अपने बाण को रोकिए और मेरे ऊपर सेतु बनाकर बानर सेना को पार कराइए।"

राम ने ऐसा ही किया। सारी सेना समुद्र को पार करके लंका में सुवेल पर्वत पर जा उतरी और रावण के सैन्य बल की थाह लेने के लिए बानर इधर-उधर अट्टों पर चढ़ गए।

दूतों से राम की सेना का समाचार पाकर रावण व्याकुल हो गया। उसने माया से राम का मस्तक बना कर सीता के पास भेजा। उसे देख कर वह मूर्च्छित हो गई। इधर उसनें अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दी। बड़े-बड़ें योद्धा फाटकों पर जम गए। उधर राम ने भी देवों को प्रणाम किया और अपनी सेना को आदेश दिया। दोनों ओर से घोर संग्राम होने लगा। कोटि-कोटि वानरों नें एक-एक द्वार घेर लिया। मेघनाद और राम का भयंकर युद्ध हुआ। उसने नागपाश फेंक कर राम-लक्ष्मण को बांध लिया और रावण की आज्ञा से सीता को पुष्पक विमान पर ले जाकर राम को वैसी अवस्था में दिखाया।

सीता विलाप करने लगी, लेकिन त्रिजटा ने उसे धीरज बंधाया। इधर विभीषण ने कहा, "ये बाण नहीं हैं। नागपाश हैं। गरुड़ से ही इनकी शान्ति हो सकती है।" यह सुन कर राम ने गरुड़ का ध्यान किया और उसे देखते ही नाग डर के मारे समुद्र में भाग गए। सब लोग बड़े प्रसन्न हुए।

युद्ध फिर होने लगा। धूम्राक्ष, अकम्पन, प्रहस्त आदि रावण के योद्धा रण में काम आए। यह देखकर रावण नें सोते हुए कुम्भकर्ण को जगाया। उसनें कहा, "माल्यवान और विभीषण ने तुम्हें ठीक ही कहा था। तुम अपने दोषों को नहीं देखते।" यह सुनकर रावण अत्यन्त कुपित हुआ। कहने लगा, "तुम भी मेरी निन्दा करते हो। मेरे सामने नीति मत बघारो। युद्ध में कुछ करके दिखाओ।" कुम्भकर्ण सबकुछ समझ गया और अकेले ही युद्ध के लिए चल पड़ा। उसे देखकर बानरों की सेना में हलचल मच गई। उसके सामने कोई नहीं ठहर सका। तब राम स्वयं युद्ध करने लगे। सुग्रीव, हनुमान, लक्ष्मण सब उनकी सहायता कर रहे थे। राम ने पहले कुम्भकर्ण की दोनों भुजाएं काट डालीं और फिर हृदय में ऐन्द्र बाण मार कर उसका अन्त कर दिया। रावण ने यह

समाचार पाकर नरान्तक आदि अपने अनेक पुत्रों को युद्ध के लिए भेजा, परन्तु वे सब भी खेत रहे। घोर युद्ध के बाद लक्ष्मण ने अतिकाय को भी मार डाला। पुत्र के मरने का समाचार सुनकर रावण बहुत विलाप करने लगा, किन्तु मेघनाद ने उसे धीरज बंधाया और स्वयं युद्ध के लिए चल पड़ा। उसने अनेक कोटि बानरों को मार कर राम-लक्ष्मण को मूर्च्छित कर दिया। सेना में कोहराम मच गया। विभीषण के कहने पर हनुमान आकाश-मार्ग से औषधि लेने के लिए हिमालय पर गए, लेकिन जब पहचान न सके तब वे सारा पर्वत ही उखाड़ लाये। उस औषधि के प्रभाव से सब लोग स्वस्थ हो गए।

उधर अपनी सेना की बुरी दशा देखकर रावण विलाप करने लगा, "अतिकाय जैसा वीर मारा गया तब मैं राज्य और सीता को लेकर क्या करूंगा। जब मेरे पुत्र ही नहीं रहे तब मैं जीवित रह कर क्या करूंगा। किसने सोचा था कि कुम्भकर्ण मनुष्य से मारा जायगा और बानर लंका पर चढ़ाई करेंगे? मेघनाद ने उनको फिर समझाया और कहा, "आज मैं सब शत्रुओं को समझ लूंगा। आप क्यों भूल जाते हैं कि इन्द्र के स्वर्ग को जीतने के लिए हम दोनों ही

काफी हैं।" इसके बाद मेघनाद के सैनिक विघ्नों की शान्ति के लिए मांगलिक कार्य करने लगे। ब्राह्मणों द्वारा उन्होंने ब्रह्मा की पूजा की। फिर मेघनाद ने कवच और शस्त्र पहन कर और रथ पर चढ़ कर युद्ध-भूमि की ओर प्रस्थान किया। उसने बानर सेना को मथ डाला और आकाश में उड़ कर माया की सीता को तलवार से काट कर सबके सामने फेंक दिया। यह देख कर राम मूर्च्छित हो गए लेकिन विभीषण ने समझाया, "हे राम, वह दुष्ट हम सबको मोह में डाल कर निकुम्भिला देवी के चैत्य में हवन करने गया है। वह अग्नि में आहुति दे, इससे पहले ही उसका वध कर देना चाहिए, क्योंकि ब्रह्मा का ऐसा ही वचन है।" यह बात सुनकर राम ने लक्ष्मण को तुरन्त वहां जाने की आज्ञा दी। विभीषण के साथ वे सब लोग वहां पहुंचे और उन्होंने मन्त्रों के साथ उसे अग्नि में हवन करते देखा। इन्द्रजीत ने उनकी ओर न देखकर समाधि लगा ली, लेकिन वे उसे अनेक प्रकार से ललकारने लगे और मारने लगे। विभीषण ने आगे बढ़कर उसे बहुत बुरा-भला कहा और लक्ष्मण ने उसके रथ, सारथि और घोड़ों पर प्रहार किया। अब तो भयंकर युद्ध छिड़ गया। मेघनाद नें आसुरास्त्र

छोड़ा और लक्ष्मण ने माहेश्वरास्त्र। अन्त में लक्ष्मण ने रौद्रास्त्र के साथ ही माहेन्द्रास्त्र को याद किया और उनसे उसका सिर काट डाला। उसकी मृत्यु से देवता बहुत प्रसन्न हुए और रावण को इतना शोक हुआ कि वह अपनी ही सेना को मारने को उद्यत हो गया। इसके बाद दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। राम क्रुद्ध हो उठे। आधे पहर में ही उन्होंने रावण की सेना में प्रलय मचा दी। राक्षसियां विलाप करके कहने लगीं, "रावण ने ब्रह्मा से वर मांगते हुए देवताओं से तो अभय मांग ली थी, पर मनुष्यों से अभय नहीं मांगी थी, इसी का यह फल है।" तभी भयंकर रथ पर चढ़कर रावण रणभूमि में आया। उसने बाण-वर्षा कर लक्ष्मण को ढक दिया और राम से युद्ध करने लगा। दोनों वीर नाना प्रकार के अस्त्र छोड़ने और काटने लगे। लक्ष्मण ने रावण की भुजा काट दी और विभीषण ने उसके घोड़ों को मार गिराया। रावण ने विभीषण पर एक भारी शक्ति चलाई, लेकिन लक्ष्मण ने उसे मार्ग में ही काट डाला, जिससे भारी क्रोध में भरकर रावण ने अष्टघण्टा नामक महाशक्ति लक्ष्मण पर छोड़ी। लक्ष्मण निष्प्राण की तरह भूमि पर गिर पड़े। हनुमान की लाई हुई औषधियां अभी रखी थीं।

उनके प्रयोग से लक्ष्मण फिर उठ बैठे।

रावण दूसरे रथ पर चढ़कर आया। तब इन्द्र की आज्ञा से मातलि राम के लिए भी रथ ले आया। राम उस पर बैठ गए। रावण ने उनपर पाशुपात-अस्त्र चलाया, जिसे राम ने इन्द्रास्त्र से काट डाला। रावण ने ब्रह्मा का दिया हुआ त्रिशूल फेंका, राम ने इन्द्र की दी हुई शक्ति चलाई और अनेक बाणों से रावण को बींध दिया। रावण मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। तब सारथी रथ को दूर हटा ले गया। लेकिन जागते ही वह उस पर क्रुद्ध हुआ और फिर युद्ध करने के लिए आ गया। अब उसने माया से बहुत सिर बना लिये, जिन्हें राम अपने बाणों से काटने लगे। युद्ध की भयंकरता से पर्वत और समुद्र भी कांपने लगे। इस समय मातलि ने राम को उस अस्त्र की याद दिलाई, जिसे ब्रह्मा ने रावण को मारने के लिए बनाया था। राम ने उस ब्रह्मास्त्र से रावण की नाभि को बींध डाला और रावण पृथ्वी पर गिर कर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

: ५ :

रावण को मरा हुआ देखकर विभीषण विलाप करने लगा, "हा ! आज दशानन पृथ्वी पर सो रहा है। मैंने पहले ही इस फल का अनुमान कर लिया

था। जो अपने घमंड में उचित बात पर ध्यान नहीं देते हैं उन्हें इसी प्रकार विपत्ति सहनी पड़ती है। मैं किस प्रकार धीरज रखूं! तीनों लोकों के स्वामी मेरे भाई धरती पर सो रहे हैं। राहु सूर्य का ग्रास करके उसे फिर से उगल देता है पर राम से ग्रस्त होकर कोई फिर नहीं पनपता। हे भाई, तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अपने बल का घमण्ड करते रहे। तुमने सीता को नहीं लौटाया। विषयों को अपने वश में नहीं कर सके। आज इन्द्र निडर होकर हवि खायगा। वायु स्वेच्छा से बहेगी। सूर्य बिना बाधा के उदय होगा। लक्ष्मी लंका को छोड़कर विष्णु के पास चली गई। देवता क्रोध से अपने हथियार राक्षसों की ओर चमकाते हुए लंका में घुस रहे हैं। हे महाराज, तुम क्यों नहीं उठते? तुम्हारे बिना मेरा चित्त शोक से डूबा जा रहा है। तुमसे रहित होकर मैं अनाथ हो गया हूं। तुम्हारे बिना यदि मैं राज करूंगा और जीवित रहूंगा तो मेरी तृष्णा को धिक्कार है। यदि तुम उत्तर नहीं दोगे तो मैं अपनी देह को नष्ट कर डालूंगा। तुम्हारे गुणों को याद करके मेरा शोक बढ़ रहा है। कौन अपनी माला उतार कर मेरे गले में डालेगा? कौन मुझे मीठा बोल कर आसन देगा?

मेरा क्षणभर भी जीवित रहना कठिन है । जबतक जीऊंगा, लंका में नहीं जाऊँगा। हे भाई, अब जब कभी मेरे साथ मन्त्रणा करोगे तो मैं प्रिय बातें कहूंगा, अप्रिय नहीं ।"

रनवास की स्त्रियां और पुरवासी भी रावण के लिए अनेक प्रकार से विलाप करने लगे। यह देख कर राम ने विभीषण से कहा, "रावण दानी, शत्रुओं के मस्तक पर बैठने वाला, यज्ञ द्वारा देवताओं को और श्राद्ध द्वारा पितरों को तृप्त करने वाला था। उसने संग्राम में देवताओं को भी जीता था। उसके लिए शोक करना उचित नहीं। तुम्हारे जैसों को दुख से अभिभूत होना भी ठीक नहीं। अपने स्वजनों को सहारा दो। तुम्हीं तो यह राज्यभार सम्भालने वाले हो।"

राम की यह बात सुनकर विभीषण नें कहा,— "अपना सगा भाई कैसा भी हो, उसकी मृत्यु से दुख होता ही है। ऐसे भाई के वियोग में वही जीवित रह सकता है, जिसका आप जैसा मित्र हो। आप न होते तो मैं पल-भर भी जीता न रहता।" इसके बाद विभीषण ने मन्त्रियों से परामर्श किया और राज-महल में जाकर अन्तिम संस्कार के लिए सब सामान लाने की आज्ञा देते हुए कहा—"उत्तम वस्त्र, चन्दन, आकाश-धूप,

मालाएं, कपूर, केसर, काष्ठ, यज्ञ-पात्र, समिधा, कुशाएं सब ऋत्विजों से लिवा कर लाओ। रावण के शरीर को स्नान करा कर ऋत्विज लोग उसे माला पहनाएं, अग्नि में हवन करें और सामवेदी सामगान करे।"

मन्त्रियों ने ऐसा ही किया और विभीषण को भी अनेक प्रकार से राज-कार्य का उपदेश दिया। रावण की अग्नि-क्रिया और जल-क्रिया हो जाने के बाद राम ने स्वर्ण कलश से विभीषण के मस्तक पर तिलक करते हुए कहा—"आज से तुम राक्षसों के राजा हो। मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम इन्द्र के समान सुखी हो। अपनी जाति के बीच में रहते हुए सब प्रकार से आनन्द करो और गुणियों से आदर प्राप्त करो। देवों की बन्दना करते हुए तुम सोम-रस का पान करना और हिंसा का परित्याग करना। पुरवासियों के सब कार्य धैर्यपूर्वक करना।"

इसके बाद हनुमान सीता के पास पहुंचे। कहा, "हे वैदेहि, तुम्हारे भाग्य की वृद्धि हो। त्रिलोकी का कंटक रावण मारा गया। आज्ञा दो कि तुम्हें सताने वाली इन पापिष्टा राक्षसियों को मार डालूं। हे देवी, में अन्तिम सेवा करना चाहता हूं।" सीता ने करुणा भरे स्वर में कहा, "हे कपि, इनका क्या

दोष ! ये बेचारी तो अपनी जीविका से अपने आपको उऋण कर रही थीं। मैं इनका नाश नहीं होने दूंगी। यदि तुम मेरा प्रिय करना चाहते हो तो राम से जाकर कहो, 'हे राम, देवी उत्सुक हैं, उन्हें बुलवाइए'।"

तब राम ने गहरी सांस लेकर आकाश की ओर देखा। विभीषण से बोले, "अलंकृत करके सीता को लाओ।" विभीषण सीता के पास जाकर मधुर वचनों से विनती करते हुए कहने लगे, "हे वैदेहि, शोक छोड़ कर प्रसन्न होओ। यहां से चलो। स्नान आदि से शुद्ध होकर सोने की पालकी में बैठो। वियोग से उत्पन्न शोक को दूर करके राम अश्वमेध यज्ञ में तुम्हारे साथ दीक्षित हों। तुम्हारे पति राम की यह आज्ञा है। तुम शीघ्र उनके पास चलो।"

सीता ने वैसा ही किया। पति के समीप पहुंच कर वह अत्यन्त शोकाकुल होकर रोने लगी।

तब राम ने उसके चरित्र के प्रति सन्देह प्रकट करते हुए कहा, "मेरी यह इच्छा है कि तुम्हें स्वीकार न करूं। तुम यहां से जाओ। कहां यह रघु का प्रसिद्ध वंश और कहां तुम्हारा पराए घर में रहना !"

यह वचन सुनकर सीता नें राम से कहा, "साधारण स्त्रियों के समान मेरे ऊपर जो तुम्हारा शक है

उसे छोड़ो। मुझे शत्रु हर ले गए थे। मैं पराधीन थी। मेरे ऊपर मिथ्या कोप न करो। दैव का भय करो। मेरा शरीर राक्षस से हरा गया था, किन्तु चित्त की वृत्ति तुममें ही लगी रही थी। महाभूत इसके साक्षी हैं। हे लक्ष्मण, इस घोर दुख का अन्त चिता है। मुझ पापिनी को अग्नि भस्म कर दे और राम उससे प्रसन्न हों।"

राम की अनुमति से लक्ष्मण ने चिता तैयार की और उसकी प्रदक्षिणा करके सीता ने कहा, "हे राम, तुम और तुम्हारी सारी सेना सुने। तुमने मुझपर शंका की है, इसलिए मैं अपने शरीर को अग्नि में जला रही हूं। हे अग्नि, यदि मैं दुष्ट हूं तो मेरी देह को भस्म करदो। यदि मैं विशुद्ध हूं तो मित्र की भांति मेरी रक्षा करो।"

तब सीता को हाथों में उठा कर अग्नि ने राम से कहा, "हे राम, साध्वी पत्नी पर तुमने शंका क्यों की? मैं इसको नहीं जला सका, इसलिए यह शुद्ध है। मैं केवल धर्म का साक्षी हूं। सीता रावण के यहां एकदम शुद्ध संकल्प से रही। क्या इतने दिन साथ रहकर भी तुमने उसके शील को नहीं जाना? यदि सीता में कोई दोष होता तो सूर्य पृथ्वी पर गिर पड़ता। यदि तुम

'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुन्तला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानन्द
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार चरित : भाग १
१५. दशकुमार चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावणवध
२८. सौन्दरनन्द

मूल्य प्रत्येक का छः आना

२७

छः आना